एकात्म मानववाद और सतत विकास

अनिल कुमार
असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज,सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश
Email-anil.bhu06@gmail.com

सारांश

एकात्म मानववाद विचारधारा के अंतर्गत दीनदयाल जी बहुत मुद्दों पर अपने विचार दिए, उन्हीं में से एक विचार अर्थायाम का हैं।

अर्थायाम एक व्यवस्था है जो अर्थव्यवस्था में संतुलन और समन्वय की बात करता है। अर्थायाम, अर्थव्यवस्था में न ही अति उत्पादन की बात करता है, न ही अति उपभोग की।

यह संसाधनों के दोहन की बात करता है, शोषण का नहीं। विकास के साथ ही प्रकृति के महत्ता को बताता है।

सतत विकास, आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण के संरक्षण की बात करता है। यह विकास और संसाधनों के संतुलन की बात करता है अर्थात देश विकास करे लेकिन पर्यावरण के कीमत पर नहीं, क्योंकि ऐसा विकास किसी काम का नहीं।

सतत विकास ही सही मायनों में मानव समाज का सर्वांगीण विकास कर सकता है और उन्हें खुशहाल बना सकता है।

मुख्य शब्द - *एकात्म मानववाद, अर्थायाम, अति उत्पादन, संयमित उपभोग, सतत विकास, ब्रुण्डलैंड आयोग, अवर कॉमन फ्यूचर, SDGs-17, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण।*

एकात्म मानववाद-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का विचार दर्शन

'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है।

यह दर्शन मानव को एकात्म अथवा समग्र रूप में देखता है और उनके शाश्वत सुख और कल्याण की बात करता है।

दीनदयाल जी का मानना था कि भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न पूंजीवाद सही है और न ही समाजवाद। हमारे देश के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा ही उपयुक्त है। यह विचारधारा कोई नयी विचारधारा नही है बल्कि हमारी सनातनी अर्थव्यवस्था की जो विशेषताएं थी, उसी का युगानुकूल रूप है। इस दर्शन का केंद्र बिंदु ही मानव है और मानव का सर्वांगीण विकास।

दीनदयाल जी के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपने विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर अपने आर्थिक विचार दिए है।

दीनदयाल जी अपने दर्शन 'एकात्म मानववाद' के अंतर्गत 'अर्थायाम' पर अपने विचार दिए, जो बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

अर्थायाम-

दीनदयाल जी के अनुसार 'अर्थायाम का अर्थ है, अर्थव्यवस्था में न तो अर्थ का अभाव हो, न ही अर्थ का प्रभाव हो।'

दीनदयाल जी कहते थे, "जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के लिए प्राणायाम जरूरी है, उसी प्रकार अर्थव्यवस्था के लिए अर्थायाम जरूरी है।"

समाज में अर्थ का अभाव और प्रभाव दोनों ही मानव के शाश्वत सुख और कल्याण के लिए बाधक है। अर्थ के अभाव एवं प्रभाव दोनों से ही समाज को मुक्त रखकर समाज में संपत्ति के बारे में एक योग्य व्यवस्था निर्मित करने को भारतीय संस्कृति में 'अर्थायाम' कहा गया है।

अर्थ का मानव जीवन में वास्तव में क्या स्थान है? इस संबंध में योग्य एवं स्पष्ट धारणा और अर्थ के उत्पादन, स्वामित्व, वितरण तथा उपभोग की समुचित एवं संतुलित व्यवस्था अर्थायाम के प्रमुख अंग है। अतः अर्थायाम का विचार करते समय इन सब बातों का भी विचार करना होगा।

केंद्रीकरण की अवधारणा अर्थायाम को स्वीकार नहीं हैं, जिस तरह राजनीतिक विकेंद्रीकरण देश में है, उसी तरह आर्थिक विकेंद्रीकरण भी होना चाहिए। अर्थ का अभाव या प्रभाव उत्पन्न होकर व्यक्ति के हितों में बाधक न बने, इसे आर्थिक स्वतंत्रता कहा जाता है अर्थात दीनदयाल जी कहना था कि आर्थिक स्वतंत्रता एवं आर्थिक लोकतंत्र की रक्षा करने वाला अर्थायाम, अर्थव्यवस्था में स्थापित किया जाना चाहिए।

दीनदयाल जी कहते थे कि अर्थायाम एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें ना तो उत्पादन का अति होता है, ना तो उपभोग का। दीनदयाल जी कहते हैं कि उत्पादन के जिन प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर हम नए वस्तुओं निर्माण करते हैं, वे साधन सीमित है। इन सीमित साधनों को मनमाने ढंग से खर्च करना कदापि बुद्धिमानी नहीं है।

दीनदयाल जी कहते थे कि हमारी अर्थव्यवस्था का उद्देश्य असीम भोग न रहकर, संयमित भोग ही होना चाहिए। प्रकृति का दोहन कर ही हम जीवित रह सकते है, ना कि उसका शोषण करके। दीनदयाल जी के अनुसार, मानवता के अस्तित्व एवं विकास के लिए प्रकृति का साथ बहुत जरूरी है। पिछले कुछ दशकों में विज्ञान की प्रगति कितनी ही अधिक क्यों न हुई हो? प्रकृति का मानव जीवन में स्थान रत्ती भर भी कम नहीं हुआ है।

प्रकृति का संरक्षण मानव जीवन के अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है।

सतत विकास-

सतत विकास की अवधारणा को 1987 में 'ब्रुण्डलैंड आयोग' द्वारा अपने रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' में सर्वप्रथम बार परिभाषित किया गया। जो इस प्रकार है-

"सतत विकास का अर्थ ऐसे विकास से है, जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।"

सतत विकास में आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण को एक साथ संतुलित किया जाता है, ताकि संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग हो और सभी के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित हो सके। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में दर्शाया गया है।

सतत विकास केवल वर्तमान के बारे में नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य के पीढ़ियों के लिए भी दुनिया को सुरक्षित और समृद्ध बनाने के बारे में है। सतत विकास में तीन मुख्य आयाम शामिल हैं, जो इस प्रकार है- **आर्थिक-** संसाधनों का प्रभावी उपयोग और आर्थिक विकास।

सामाजिक- गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य और समानता।

पर्यावरणीय- प्रदूषण कम करना, जैव विविधता की रक्षा करना और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।

सतत विकास का उद्देश्य इन तीनों क्षेत्रों (आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय) के बीच संतुलन को बनाना होता हैं, ताकि कोई एक क्षेत्र दूसरे को नुकसान न पहुँचा सके। सतत विकास जलवायु परिवर्तन से भी लड़ता है। संक्षेप में, सतत विकास एक समग्र दृष्टिकोण है जो यह सुनिश्चित करता है कि हम अपनी ज़रूरतों को पूरा करें और साथ ही पृथ्वी और उसके संसाधनों को भी बचाए रखें।

तुलनात्मक अध्ययन-

दीनदयाल जी का अर्थायाम एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज में, अर्थव्यवस्था में संतुलन, संयमित व समन्वय की बात करता है। अर्थव्यवस्था में उत्पादन और उपभोग में संतुलन हो, संयमित उपभोग हो, संसाधनों का दोहन हो, प्रकृति का संरक्षण हो। सतत विकास स्पष्ट करता है कि देश के खुशहाली के लिए आर्थिक विकास जरूरी है, लेकिन आर्थिक विकास को तीव्र करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का शोषण, पर्यावरण को नुकसान नहीं होना चाहिए।

यदि प्रकृति के कीमत पर हम आर्थिक विकास कर रहे हैं तो यह विकास लम्बा नही चल पाएगा और न ही स्थिर रहेगा, साथ ही मानव को खुशहाल भी नहीं रख पायेगा, ऐसा विकास किसी काम का नही।

ऐसे में सतत विकास बहुत जरूरी हो जाता है क्योंकि यह एक तरफ आर्थिक विकास की बात करता है तो दूसरी तरफ संसाधनों, पर्यावरण को संरक्षित करने की भी बात करता है, अर्थात आर्थिक विकास और पर्यावरण में संतुलन बनाये रखता है।

निष्कर्ष-

दीनदयाल जी का अर्थायाम और सतत विकास का अध्ययन करने पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि अर्थायाम का विचार, सतत विकास के ही समान हैं जो विकास तो चाहता है लेकिन प्रकृति के कीमत पर नहीं। सतत विकास, आर्थिक विकास के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण भी चाहता हैं और यहीं विकास, सही मायने में विकास हैं।

वर्तमान में सतत विकास बहुत जरूरी है, जो आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण का भी ध्यान रखता हैं। सतत विकास से ही मानव जीवन का सर्वांगीण विकास संभव हैं और उन्हें खुशहाल रखा जा सकता हैं।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. लाल, एस. के. और एस. एन. लाल.(2016). भारतीय अर्थव्यवस्था: सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

11. UN. SDGs-17

12. योजना मासिक पत्रिका.

13. www.iisd.org